[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 7987 **IC**

Unique Paper Code : 12057503

Name of the Paper : अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य

Name of the Course : **B.A. (H.) Hindi, CBCS – DSE-I**

Semester : V

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. स्त्री-विमर्श को स्पष्ट करते हुए नारी मुक्ति आन्दोलनों पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

दलित-विमर्श को दिशा लेने में ज्योतिबा फूले और डॉ. भीमराव अम्बेडकर के योगदान की चर्चा कीजिए।

P.T.O.

Scanned by CamScanner

2. किन्हीं **तीन** अंशों की व्याख्या कीजिए :- (10×3=30)

(क) "बात सिर्फ हदीश की नहीं, बल्कि ईमानदारी से एक रास्ता चुनने की है। जिन्दगी का कोई नजरिया तो होना चाहिए जब आप उस पर चलते हैं तो भटकन कम होगी और सुकून और इन्साफ भी तयशुदा कानून के मुताबिक आपको मिलेगा, वरना जंगल का कानून आपका मानना पड़ेगा और इंसानी दुखों का कोई अंत नहीं होगा।"

अथवा

"सनातन आखेटक, हिरणी-त्रयीं और उनके तीनों शिशुयों के नक्षत्र-दृश्य की गुत्थी गोविन्द-गुरु क मस्तिष्क की किसी कंदरा में अटक कर रह गई। रात का तीसरा पहर समाप्तह हो रहा था। थके-मादे शरीर को आराम देने के लिए नींद को दबे पाँव आना ही होता है। गोविन्द गुरु की झपकती पलकों की गति धीमी हुई और उन्हें पता ही नहीं चला कि उन्हें नींद कब आ गई। वस्तुत: नींद का आगाज होता तो भी कुछ इसी तरह है"।

(ख) शंकित हो मत बैठ कूल पर ओ मांझी,
तेरी वह पतवार रूप है साहिल का
यह तो सच, हर भोर सांध्य सन्देश है,
रोक सका न कौन प्रचंद प्रकाश को?
आज कल्पना विचर रही हिमालय में,
दीख रहा प्रासाद कुटी के छेद से,
वैभव मिले सरलता से तो ठीक है,

Scanned by CamScanner

वैभव नहीं, मिले तो अरे विभेद से
कितने सावन आए, आकर लौट गए।
कौन बुझा पाया तृषित की प्यास को ?

अथवा

यात्रा लेकिन यहीं समाप्त नहीं हुई है
अभी पार करनी है कई और खाइयाँ फटकारों की
दुख के एक दो और समुद्र
पठार यातनाओं के अभी और दो चार
जब आखिर आएगी वह औरत
जिसे देख तुम और भी विस्मित होओगी
भयभीत भी शायद

(ग) मेरे साथ मेरा अकेलापन हमेशा रहा है, पर यह अकेलापन मुझे जीवन का अर्थ भी समझाता रहा है। मैंने अपने आपको बचाया है, अपने मूल्यों को जीवन में सँजोया। हाँ, टूटी हूँ, बार-बार टूटी हूँ..... पर कहीं तो चोट के निशान नहीं.... दुनिया के पैरों तले रौंदी गई, पर मैं मिट्टी के लौंदे में परिवर्तित नहीं हो पाई। इस उम्र मे भी एक पूरी की पूरी साबुत औरत हूँ, जो जिन्दगी को झेल नही रही बल्कि हँसते हुए जी रही है, जिसे अपनी उपलब्धियों पर नाज है। दोस्ती का हाथ बढ़ाकर जिसकी गर्म हथेलियाँ हर किसी को अपने करीब खींच लेती है।

अथवा

Scanned by CamScanner

मैं वही पर खड़ा था। मैंने बहुत जोर से पिता जी को एक तमाचा मारा। उन्होंने मुझे उलटकर वैसे ही मारा। उनका तमाचा, इतनी जोर का था कि मैं कुछ देर के लिए चौंधियाँ सा गया था। फिर कुछ पल के लिए कुछ भी दिखाई नहीं दिया। मुझे ऐसा लगा मानो मैं अँधा सा हो गया। किन्तु इस घटना का परिणाम यह हुआ कि आगे पिताजी माँ को मारने से घबराने लगे। बस्ती के लगभग सभी लोगों ने मुझे सहीं ठहराया। आगे चलकर पिता जी के प्रति मेरी घृणा विकराल रूप लेती चली गई।

3. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए :- (10×3=30)

(क) 'अन्या से अनन्या' मे अभिव्यक्त स्त्री चेतना।

(ख) 'सलाम' कहानी में व्यक्त दलित जीवन के प्रश्न।

(ग) सहानुभूति बनाम स्वानुभूति।

(घ) समाजवादी नारीवाद।

(ङ) स्त्री-विमर्श की दृष्टि से 'खुदा की वापसी' की समीखा।

(च) जल, जंगल और जमीन का प्रश्न।

(2500)

Scanned by CamScanner